Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 03, (अगस्त, 2024)
पृष्ठ संख्या 48–51

# किसान बन्धु जायद समय में दाल का विकल्प उर्द की खेती

**मो0 मुईद[1], डॉ0 मुवीन[2], नदीम खान[1] एवं मो0 शहबाज[1]**

[1]शोध छात्र सस्य विज्ञान,
इंटीग्रल इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल साइंस एंड टेक्नोलॉजी,
इंटीग्रल यूनिवर्सिटीए लखनऊ।
मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय, रामपुर, भारत।

**Email Id:** mmued@iul.ac.in

उर्द की खेती उत्तर प्रदेश में दलहनी फसलों के रूप में मुख्य रूप से खरीफ ऋतू में की जाती है लेकिन जायद ऋतू में समय से बुवाई करके इसकी अच्छी पैदावार प्राप्त की जा सकती है। भारतीय दलहन अनुसंधान, कानपुर के कृषि वैज्ञानिक डॉ. पुरुषोत्तम कहते हैं, "जायद में बोई जाने वाली दलहन की प्रमुख फसलों में मूंग और उड़द मुख्य फसलें होती हैं। फरवरी से उड़द की बुवाई शुरू कर देनी चाहिए, क्योंकि इस समय वातारण में अनुकूल नमी रहती है, नहीं तो तापमान बढ़ने के बाद बुवाई करने में सिंचाई की जरूरत पड़ती है। दलहनी फसल होने के कारण इसकी जड़ों में बनने वाली गांठों में उपस्थित जीवाणु वायुमण्डलीय नत्रजन को भूमि में स्थिर करके भूमि को उपजाऊ बनाती है। इस प्रकार यह फसल भूमि की उर्वराशक्ति को बनाये रखने में भी सहायक है।

## भूमि चयन एवं उसकी तैयारी

जायद ऋतू में उर्द की खेती हेतु हल्की दोमट एवं मटियार भूमि व पानी के निकास की समुचित व्यवस्था हो वह उर्द के लिये सबसे अधिक उपयुक्त होती है। उर्द की बुवाई हेतु जब भूमि में अच्छी नमी हो तब एकदृदो जुताई देशी हल से अथवा कल्टीवेटर से करके मिटटी को बुवाई के लिए तैयार किया जा सकता है। प्रत्येक जुताई के बाद पाटा लगाना आवश्यक है जिससे भूमि में पर्याप्त नमी बनी रहे और अधिकतम बीज आसानी से अंकुरित हो जाय।

## जायद में बुवाई हेतु प्रमुख प्रजातियाँ –

उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार) के अनुसार, उर्द की प्रमुख प्रजातियाँ पूरे उत्तर प्रदेश के लिए

| क्र.सं. | प्रजाति | पकने की अवधि(दिन में) | उपज कु. / हे. | कीट रोग ग्राहिता | उपयुक्त क्षेत्र |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | आजाद उर्द –1 | 70–75 | 8–10 | पीला मौजेक अवरोधी | सम्पूर्ण उ.प्र. |
| 2 | आजाद उर्द –2 | 70–75 | 10–12 | पीला मौजेक अवरोधी | सम्पूर्ण उ.प्र |
| 3 | ज– 9 | 75–80 | 6–8 | पीला मोजैक सहिष्णु | सम्पूर्ण उ.प्र. |
| 4 | उत्तरा | 80–85 | 8–11 | पीला मौजेक अवरोधी | सम्पूर्ण उ.प्र. |
| 5 | शेखर –2 | 75–80 | 10–12 | पीला मौजेक अवरोधी | सम्पूर्ण उ.प्र. |
| 6 | पन्त यू–19 | 75–80 | 8–9 | पीला चित्रवर्ण अवरोधी | सम्पूर्ण उ.प्र. |
| 7 | नरेन्द्र उर्द–1 | 75–80 | 8–10 | पीला मौजेक अवरोधी | सम्पूर्ण उ.प्र. |

## बीज उपचार एवं बीज शोधन –

बीज शोधन करने हेतु बीजों को एक बोरे पर फैलाकर, राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें जिसकी विधि निम्नवत है। आधा लीटर पानी में 200 ग्राम राइजोबियम कल्चर का लूर पैकेट मिला दें। इस मिश्रण को 10 किग्रा. बीज के ऊपर छिड़क कर हल्के हाथ से मिलाएं जिससे बीज के ऊपर एक हलकी पर्त बन जाती है। इस बीज को छायें में 1–2 घन्टे सुखाकर लें और ध्यान रखें कि बीज की बुवाई सायंकाल 4 बजे के बाद ही करें। तेज धुप में कल्चर के जीवाणुओं के मरने की आशंका बनी रहती है। जिन खेतों में उर्द की खेती पहली बार अथवा बहुत लम्बे समय के बाद की जा रही हो, वहां कल्चर का प्रयोग करना अति आवश्यक है।

## बीमारियों से बचाव हेतु –

2.5 ग्राम थीरम एवं एक ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति किग्रा. बीज की दर से शोधन करें। प्रारम्भिक अवस्था में रोग रोधक क्षमता बढ़ती है और जमाव भी अच्छा हो जाता है फलस्वरूप प्रति इकाई पौधो की संख्या सुनिश्चित हो जाती है और उपज में वृद्धि भी होती है।

## बीज की मात्रा –

जायद ऋतु में 25–30 किग्रा० बीज की मात्रा का प्रयोग करना चाहिए क्यों कि जायद की ऋतु में पौधों के अंकुरण की प्रतिशत मात्रा कम होने की आशंका बनी रहती है एवं पौधा कम बढ़ता है।

## बुवाई की विधि –

उर्द की बुवाई कूड़ों में करने से अंकुरण प्रतिशत अधिक एवं पौधे स्वस्थ रहते है। कूंड से कूंड की दूरी 20–25 सेमी.रखना चाहिए एवं बुवाई के तुरन्त बाद पाटा लगाना जरुरी होता है जिससे भूमि में नमी अधिक दिनों तक बनी रहे और बीज का अंकुरण अधिक से अधिक हो सके।

## बुवाई का समय –

बुवाई का उपयुक्त समय फरवरी से मार्च।

## उर्वरको का प्रयोग –

सामान्यतः उर्वरको का प्रयोग 15–20 किग्रा० नत्रजन,40 किग्रा० फास्फोरस एवं 20 किग्रा. गन्धक प्रति हेण की दर से प्रयोग करना चाहिए। फास्फोरस का प्रयोग करने से उर्द के दाने की उपज में विशेष वृद्धि होती है उर्वरको की सम्पूर्ण मात्रा बुवाई के समय कूंडो में बीज से 2–3 सेमी नीचे देनी चाहिए। यदि सुपरफास्फेट उपलब्ध न हो तो 2 कुन्तल जिप्सम का प्रयोग बुवाई के समय किया जा सकता है।

## सिंचाई –

बुवाई के बाद पहली सिंचाई 30–35 दिन बाद करनी चाहिए। पहली सिंचाई बहुत जल्दी नहीं करनी चाहिए बहुत जल्दी सिंचाई करने से जड़ों तक ग्रंथियों का विकास सही से नही होता है।

इसकी सिंचाई आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल हल्की सिंचाई के रूप में करते रहना चाहिए। स्प्रिंकलर विधि से सिंचाई करना अत्यधिक लाभप्रद रहता है।

## खरपतवार नियंत्रक –

पहली सिंचाई के बाद खुरपी से खरपतवार को निकाल लेना चाहिए जिससे खरपतवार नष्ट होने के साथ साथ भूमि में वायु का भी संचार बढ़ जाता है जो उस समय मूल ग्रंथियों में जीवाणुओं द्वारा वायु। मंडलीय नत्रजन एकत्रित करने में सहायक होता है। खरपतवारों का रासायनिक नियंत्रण पैन्डीमेथलीन 30 ई०सी० के 3.3 लीटर को 900–1000 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के दो तिन के अन्दर जमाव से पूर्व छिडकाव करें। खरपतवार नियंत्रण हेतु पंक्तियों में बोई गई फसल में वीडर का प्रयोग आर्थिक दृष्टि से लाभकारी होगा।

## फसल सुरक्षा –

उर्द में प्रायः पीले चित्रवर्ण (मोजैक) रोग का प्रकोप होता है। इस रोग के विषाणु सफेद मक्खी द्वारा फैलते है।

### नियंत्रण –

1. समय से बुवाई करनी चाहिए।
2. पिला चित्र वर्ण (मोजैक) अवरोधी प्रजातियों की बुवाई करनी चाहिए।
3. चित्रवर्ण (मोजैक) प्रकोपित पौधे दिखते ही सावधानी पूर्वक उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।
4. जब खेत में प्रति पौधा पर 5–10 मक्खी दिखाई देने लगे तब मिथाइल ओ–डिमेटान 25 ई.सी. या डाईमेथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर प्रति हे. की दर से 600–800 ली. पानी में छिडकाव करना चाहिए।

**थ्रिप्स –**

इस प्रकार से कीट के शिशु एवं प्रौढ़ दोनों पत्तियों एवं फूलों से रस चूसते है। भारी प्रकोप होने पर पत्तियों से रस चूसने के कारण प्रकाश संश्लेषण में समस्या होती है और वह मुढ़कर गिर जाती है जिससे उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। **नियंत्रण** – डायमिथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर प्रति हे. की दर से 600–800 ली. पानी में घोल कर छिडकाव करना चाहिए।

**हरे फुदके –**

इस कीट के प्रौढ़ एवं शिशु दोनों पत्तियों से रस चूस कर प्रतिकूल प्रभाव डालते है। **नियंत्रण** – मिथाइल–ओ–डिमेटान 25 ई.सी. को 800 से 1000 लीटर पानी में 1.0 लीटर की दर से घोल बनाकर शाम के समय छिडकाव करना चाहिए।

**फलीवेधक –**

फली वेधकों के नियंत्रण के लिए क्यूनालफास 25 ई.सी. 1.25 लीटर प्रति हे. की दर से 600–800 लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करना चाहिए।

## कटाई एवं भण्डारण –

जब फली पूरी तरह पककर काली हो जाये तो कटाई करना चाहिए। उर्द की फलियाँ एक साथ ही पाक जाती हैं तथा चिटकती नहीं। अतरू फसल की कटाई एक साथ की जा सकती हैं। भण्डारण में रखने से पूर्व इनको अच्छी तरह साफ करके सुखा लेना चाहिए और भण्डारण के समय इसमें 10 प्रतिशत से अधिक नमी नही होनी चाहिए। भण्डारण गृह एवं कोठियों को भण्डारण करने से पूर्व कम से कम दो सप्ताह पूर्व खाली करके उनकी सफाई मरम्मत व चुने से पुताई कर देनी चाहिए। 1रू99 मैलाथियान 50 ई.सी. तथा पानी अथवा 1रू150 डाइक्लोरोवास ७६ ई.सी. एवं पानी के अनुपात में बने तीन लीटर घोल को प्रति 100 वर्ग मीटर की दर से गोदाम के फर्श तथा दीवारों पर छिडकाव करना चाहिए। वर्षा ऋतु में एक या दो बार मौसम साफ रहने पर निरीक्षण करना चाहिए और आवश्कतानुसार धूनीकरण पुनरू कर देना चाहिए। सूखी नीम की पत्ती के साथ भण्डारण करने पर कीड़ो से सुरक्षा की जा सकती हैं।

## प्रमुख बिन्दु –

1. उर्द की बुवाई अधिक उत्पादन हेतु समय से करनी चाहिए।
2. सुपर फास्फेट का प्रयोग बेसल ड्रेसिंग में अधिक लाभदायक रहता है।
3. बुवाई के 25–30 दिन बाद पहली सिंचाई करना चाहिए।
4. बीजोपार एवं पी.एस.वी. राइजोबियम कल्चर से करना आवश्यक है।
5. यदि आलू के बाद उर्द की फसल ली जाती है तो नत्रजन के प्रयोग की आवश्यकता नही है।